International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

भारत के स्वाधीनता संघर्ष में सुभाषचन्द्र बोस का योगदान

Dr. Sanjeet
Lecturer in History
G.S.S.S. Baniyani , District- Rohtak (HR.)
E-mail: sanjeetkanheli1980@gmail.com

शोध आलेख सार– वस्तुतः भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा के उद्भव एवं विकास का अपना अलग महत्व है। द्वितीय महायुद्ध के दौरान भारत में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जैसे राष्ट्रवादियों को भारत की सेनाओं को ब्रिटिश सरकार के पक्ष में युद्ध करने के निर्णय से काफी निराशा हुई और उन्होंने ब्रिटिश सरकार के निर्णय की भरपूर आलोचना की। तत्कालीन भारत की बदलती परिस्थितियों में नेता जी ने यूरोप के कई देशों की यात्रा की और वहां के राष्ट्रवादी नेताओं से भेंट की। इस कारण सुभाषचन्द्र बोस 1933 से 1938 तक भारत की सक्रिय राजनीति से अलग रहे। जब 18 जनवरी 1938 को कांग्रेस के महामन्त्री आचार्य जे.बी. कृपलानी ने घोषणा की कि सुभाषचन्द्र बोस को गुजरात के हरिपुरा में होने वाले कांग्रेस के 51वें अधिवेशन का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है तो उस समय सुभाषचन्द्र बोस इंगलैंड में थे। यह खबर सुनकर वे 24 जनवरी 1938 को कलकता पहुंच गए। भारत में आने के बाद हरिपुरा कांग्रेस में उन्होंने अध्यक्ष पद से अपने जीवन का सबसे लम्बा भाषण दिया जो उनकी राजनीतिक परिपक्वता को दर्शाता है। 1939 में नेता जी ने गांधी समर्थित उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया को हरा दिया तो गांधीवादी नेता उनके विरूद्ध हो गए और अंततः उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देकर 3 मई 1939 को फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना की घोषणा कर दी। तत्पश्चात 1942 में उन्होंने विदेशी धरती पर आजाद हिन्द फौज की स्थापना की जो अन्त तक भारत की आजादी की लड़ाई लड़ती रही। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के स्वाधीनता संघर्ष में सुभाषचन्द्र बोस के योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

मूलशब्द– राष्ट्रीय आन्दोलन, उग्र राष्ट्रवादी, फारवर्ड ब्लॉक, आजाद हिन्द फौज।

भूमिका– भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में सुभाषचन्द्र बोस का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। वास्तव में नेता जी बाल्यकाल से ही क्रांतिकारी विचारधारा वाले व्यक्ति थे।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

मात्र 21 वर्ष की आयु में आई.सी.एस. की परीक्षा पास करने के बाद उन्होनें सरकारी नौकरी छोड़कर गांधी जी के साथ असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और उनके क्रान्तिकारी विचारों के कारण ब्रिटिश सरकार ने 1929 में उनको 6 वर्ष का कठोर दण्ड दिया। उसके बाद मार्च 1933 से मार्च 1936 तक तथा नवम्बर 1937 से 1938 तक वे यूरोप की यात्रा पर रहे। उन्होंने इस दौरान भारत की आजादी के बारे में कई देशों के महत्वपूर्ण नेताओं से सम्पर्क किया और धीरे–धीरे सुभाषचन्द्र बोस भारत के एक प्रमुख राजनेता के रूप में पहचाने गए। वे जहाँ भी गए उनका पूर्ण सम्मान हुआ। 1934 में उन्होनें '**इंडियन स्ट्रगल**' पुस्तक भी लिखी।[1] 1938 में उन्हें कांग्रेस का का अध्यक्ष पद सौंपा गया तथा अगले वर्ष गांधी समर्थित उम्मीदवार को हराकर वे पुनः कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर सुशोभित हुए। परन्तु गांधी जी व अन्य नरम पंथियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण उन्होंने अपना अध्यक्ष पद त्याग दिया और इसके बाद उन्होंने फारवर्ड ब्लॉक नामक संगठन की स्थापना की।

चूंकि ब्रिटिश सरकार सुभाषचन्द्र बोस को एक खतरनाक क्रांतिकारी मानती थी, इसलिए 02 जुलाई 1940 को भारतीय रक्षा अधिनियम की धारा 129 के तहत उनको गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने 29 नवम्बर 1940 को जेल में ही अपना उपवास शुरू कर दिया। जब जेल में उनकी हालत बिगड़ने लगी तो ब्रिटिश सरकार ने मजबूर होकर 5 दिसम्बर 1940 को जेल से मुक्त कर दिया। तत्पश्चात वे कलकता में अपने पैतृक घर पर रहने लग गए और पुलिस उनकी निगरानी करती रही। इस दौरान उन्होंने अपनी दाढी बढा ली और 17 जनवरी 1941 को रात के समय घर से निकल गए। वे एक कार से गोमह तक गए और बाद में ट्रेन से पेशावर पहुंचे। अंत में वे काबुल गए और उसके बाद एक इटालियन पासपोर्ट की मदद से रूस पहुंचे। 28 मार्च 1941 को एक विमान द्वारा वे मास्को जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुंच गए। इस सन्दर्भ में लिखा गया है कि बोस की कलकता से बर्लिन की यात्रा एक ऐतिहासिक यात्रा है।[2] बर्लिन में उनका भव्य स्वागत हुआ और उनके सामने बर्लिन रेडियो से ब्रिटिश विरोधी भाषण देने का प्रस्ताव रखा गया। इसके

[1] विश्व प्रकाश गुप्त एवं मोहिनी गुप्त, सुभाषचन्द्र बोसः व्यक्ति और विचार, पृ0 155.

[2] भगतराम तलवार, दॉ तलवारस ऑफ पठान एण्ड सुभाषचन्द्रस ग्रेट एस्केप, पृ0 46.

साथ–साथ उनको जर्मनी में भारतीय युद्धबंदियों को संगठित करके आजाद हिन्द फौज गठित करने का प्रस्ताव भी रखा गया। जब 22 जून 1941 को जर्मनी ने रूस के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी तो नेता जी ने रोम तथा पेरिस में स्वतन्त्र भारत केन्द्रों की स्थापना की और लगभग 3000 भारतीय सैनिकों की एक टुकड़ी का गठन किया। इन्हीं दिनों भारत के एक महान क्रांतिकारी रास बिहारी बोस जापानी बनकर जापान में रह रहे थे। इस दौरान दूसरे विश्वयुद्ध में जर्मनी का साथ देने के लिए जापान युद्ध में शामिल हुआ तो भारतीय क्रांतिकारियों ने 28 मार्च 1942 को टोकियो में सभी भारतीय नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया और भारतीय स्वतंत्रता लीग की स्थापना की गई तथा आजाद हिन्द फौज बनाने की घोषणा कर दी गई।[3]

दिसम्बर 1941 में जापानियों ने उत्तर मलाया पर आक्रमण किया और ब्रिटिश सेना को हरा दिया। इस समय कैप्टन मोहन सिंह और उनके कुछ साथियों ने जापानी सेना के सामने आत्मसमपर्ण कर दिया। ज्ञानी प्रीतम सिंह और जापानी सैनिक अधिकारी फयूजीहारा ने कैप्टन मोहन सिंह को भारत की स्वतंत्रता के लिए काम करने की प्रेरणा दी। जब 15 फरवरी 1942 को सिंगापुर का पतन हुआ तो ब्रिटिश सरकार की तरफ से कर्नल हंट ने 40,000 भारतीय युद्धबंदी जापानी सरकार के प्रतिनिधि मेजर फयूजीहारा को सौंप दिये। इन युद्धबंदियों की मदद से कैप्टन मोहन सिंह ने आजाद हिन्द फौज का निर्माण किया। इस फौज का काम यह था कि वह जापानी सेना के साथ मिलकरभारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ेगी। अगस्त 1942 तक आजाद हिन्द फौज में बड़ी संख्या में नौजवान शामिल हुए और उनके लिए सैनिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। अंततः 1 सितम्बर 1942 को आजाद हिन्द फौज की विधिवत स्थापना हो गई।[4] इस फौज के सैनिकों को शारीरिक प्रशिक्षण के साथ–साथ भारतीय इतिहास की भी जानकारी दी गई और उनको प्रेरित किया गया कि विदेशी शासन से मुक्ति दिलाना ही उनका पुनीत कर्त्तव्य है। इसके साथ–साथ सैनिकों को एकता, विश्वास और बलिदान तीन मूलमन्त्र दिये गए। इसी बीच 8 फरवरी

[3] आर.सी. अग्रवाल एवं डॉ. महेश भटनागर, भारतीय संविधान का विकास तथा राष्ट्रीय आन्दोलन, पृ0 148.

[4] ए.सी. चटर्जी, इंडियाज स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, पृ0 20.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

1943 को नेता जी बैंकाक सम्मेलन के लिए चल पड़े। वे भारी जोखिम उठाकर समुन्द्र के रास्ते जापानी पंडुब्बियों में यात्रा करते हुए मई महीने में सुमात्रा पहुंचें। यूरोप की अपेक्षा एशिया में उन्हें अधिक आत्मयिता का भाव महसूस हुआ। 10 जून 1943 को उनकी भेंट जापान के प्रधानमंत्री तोजो से हुई। 16 जून 1945 को तोजो ने जापानी संसद में कहा कि जापान भारत की आजादी के लिए हर प्रयास करेगा।[5] कुछ दिनों के बाद नेता जी ने एक संवाददाता सम्मेलन में भाषण दिया और कहा कि यदि धुरी शक्तियां युद्ध में विजयी होती हैं तो भारत की खोई हुई आजादी मिलना निश्चित है। इसके बाद वे निरन्तर टोकियो रेडियो से भाषण देते रहे और उन्होंने अपने भाषणों में भारत की आजादी के लिए सशस्त्र संघर्ष पर बल दिया।

इसके बाद नेता जी 2 जुलाई 1943 को टोकियो से सिंगापुर पहुंच गए। इस दौरान रास बिहारी बोस ने आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सुभाषचन्द्र बोस को सौंप दिया था। सिंगापुर में अपना ऐतिहासिक भाषण देते हुए कहा कि हमारी लड़ाई प्रत्येक प्रकार के साम्राज्य के खिलाफ है। उन्होंने दिल्ली चलो का नारा दिया और कहा कि आज मैं तुम्हें भूख, प्यास, घोर युद्ध और कठिनाईयों के सिवाय कुछ नहीं दे सकता। इस आजादी की लड़ाई में कौन जीवित रहता है और किसे मृत्यु आती है, यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। हमें अपना सर्वस्व बलिदान करके देश की आजादी को प्राप्त करना है।[6] इस समय उन्होंने अपने प्रेरणादायक संदेश में सैनिकों को कहा कि तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा। तत्पश्चात् नेता जी ने 21 अक्तूबर 1943 को स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार की घोषणा की। इसका प्रधान कार्यालय सिंगापुर में था और सुभाषचन्द्र बोस सरकार के अध्यक्ष, प्रधानमंत्री और सर्वोच्च सेनापति थे। इसका महिला संगठन भी बनाया गया और 23 अक्तूबर 1943 को जापान की सरकार ने आजाद हिन्द फौज की अन्तरिम सरकार को मान्यता दे दी। बाद में जर्मनी, इटली, मान्चुको, थाईलैंड, बर्मा आदि देशों ने भी इसे मान्यता दे दी। 24 अक्तूबर 1943 को आजाद हिन्द फौज ने ब्रिटेन और अमेरिका के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। इस समय नेता जी ने सिगापुर में भारतीयों की सभा के

[5] एच. टोए. सुभाषचन्द्र बोसः दॉ स्प्रिंगिग टाईगर, पृ0 29.

[6] बलराज शास्त्री हरदास, आर्मड स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, पृ0 431.

सामने कहा कि यह एक निर्णायक युद्ध होगा और इसमें निश्चित तौर पर आजाद हिन्द फौज की विजय होगी।

आजाद हिन्द फौज के तीन ब्रिगेड थे– गांधी, आजाद और नेहरू ब्रिगेड। इन तीन ब्रिगेडों के चुने हुए सैनिकों को लेकर चौथा ब्रिगेड बनाया गया और इसका नाम सुभाष ब्रिगेड रखा गया। यह ब्रिगेड सितम्बर 1943 में मलाया में संगठित किया गया था और शाहनवाज खान को इसका सेनापति नियुक्त किया गया था। 24 जनवरी 1944 को बर्मा में जापान के प्रधान सेनापति ने नेताजी तथा शाहनवाज खान से भेंट की और युद्ध नीति पर विचार विमर्श किया। एक निर्णय के अनुसार नंबर 1 बटालियन को प्रोम के रास्ते अराकान में कालादीन घाटी में पहुंचना था तथा बटालियन नंबर 2 व 3 को माण्डले तथा कलेवा के रास्ते हाका और फालम के चिन्ह हिल क्षेत्रों में पहुंचना था। अतः 4 फरवरी 1944 को सुभाष ब्रिगेड की पहली बटालियन एक रेल द्वारा रंगून से प्रोम के लिए चल पड़ी। प्रोम से सिपाही पैदल चले और रास्ते में उन्हें शत्रु सेना की बम वर्षा का भी सामना करना पड़ा। मार्च 1944 में उन्होंने ब्रिटिश सेना को करारी शिकस्त दी तथा कलादीन नदी के किनारे पर यह सेना लगभग 50 मील तक आगे बढ़ गई। इस लड़ाई में आजाद हिन्द फौज तथा जापान की संयुक्त सेना ने प्लेटवा तथा उसके समीपवर्ती डलेटमे पर अधिकार कर लिया। यहाँ से वे भारत का सीमान्त क्षेत्र देख सकते थे। भारत भूमि पर अंग्रेजों की सबसे निकट चौकी मौडक में थी जो कोवस बाजार के पूर्व में 50 मील की दूरी पर स्थित थी। रात के समय सेना ने हमला करके चौकी पर अधिकार कर लिया और आजाद हिन्द फौज भारत की धरती पर पहुंच गई। यहां पर तिरंगा फहराया गया तथा सैनिकों ने आजाद हिन्द फौज का राष्ट्रीय तराना गाया।[7] चूंकि मोडक तक रसद सामग्री पहुंचने में काफी परेशानी थी और अंग्रेजों के हमले का भी डर था। इसलिए जापानी सेना ने मोडक छोड़ने का निर्णय लिया और आजाद हिन्द फौज के सेनाध्यक्ष को भी यही सलाह दी। परन्तु आजाद हिन्द फौज के अफसरों ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया और कहा कि हमारा लक्ष्य तो दिल्ली का

[7] विश्व प्रकाश गुप्त एवं मोहिनी गुप्त, सुभाषचन्द्र बोसः व्यक्ति और विचार, पृ0 190–91.

लालकिला है और वह आगे है। हमें तो दिल्ली पहुंचने के आदेश मिले हैं, अतः हमारे लिए पीछे लौटना संभव नहीं हैं।

आजाद हिन्द फौज के सेनापति ने एक सैनिक टुकड़ी मोडक में छोड़कर बाकी सेना वहां से हटाने का निर्णय लिया। इससे जापानी सेना प्रभावित हुई और उन्होंने भी अपनी एक टुकड़ी कैप्टन सूरजमल के नेतृत्व में वहां पर छोड़ दी। कैप्टन सूरजमल के नेतृत्व में सैनिक टुकड़ी मई 1944 से सितम्बर 1944 तक मोडक की रक्षा में तैनात रही। आजाद हिन्द की 2 और 3 बटालियन ने फालम और हाका का प्रबन्ध जापानियो के हाथ से ले लिया। चूंकि इस क्षेत्र में ब्रिटिश गुरिल्ला छापामारों की भरमार थी, इसलिए आजाद हिन्द फौज ने उन पर कई बार हमले किये और कलांग– कलांक की चौकी पर अधिकार जमा लिया। अब जापानी सैनिक अधिकारी आजाद हिन्द फौज के शौर्य व साहस से संतुष्ट थे। अतः उन्होंने ब्रिगेड को कोहिमा की तरफ बढने का आदेश दिया और कहा कि इंफाल का पतन होते ही यह ब्रिगेड तेजी से ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके बंगाल में प्रवेश करे। इस कारण आजाद हिन्द फौज के 150 सिपाही हाका में तथा 300 सिपाही फालम में छोड़ दिए गए तथा शेष सेना कोहिमा की तरफ बढ़ गई। परन्तु विश्वयुद्ध में जापान की सैनिक स्थिति बिगड़ने से आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को पीछे हटना पड़ा। इस दौरान गांधी ब्रिगेड इंफाल की तरफ बढ़ी तथा जून 1944 में आजाद हिन्द फौज के 600 सैनिकों ने ब्रिटिश सेना के 3000 सैनिकों से लोहा लिया। अक्तूबर 1944 में जापानी सरकार युद्ध के विपरीत प्रभाव को देखते हुए आजाद हिन्द फौज को मदद देने की स्थिति में नहीं रही तो सुभाषचन्द्र बोस शंघाई के रास्ते बर्मा लौट आए। अंततः साधनों की कमी के बावजूद आजाद हिन्द फौज ने अपनी आजादी की लड़ाई जारी रखी। मई 1945 में आजाद हिन्द फौज ने आत्मसमपर्ण कर दिया।[8]

जब सुभाषचन्द्र बोस को मलाया में जापान के आत्मसमपर्ण की खबर मिली तो वे 16 अगस्त 1945 को बैंकाक गए और 17 अगस्त को साईगोन पहुंचे। यहाँ उन्होंने अपने कई विश्वस्त अधिकारियों से बातचीत की। बोस ने जापानी अधिकारी नेगेशी को बताया कि

[8] विधुत चक्रवर्ती एवं राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, मार्डन इंडियन पॉलिटिक्ल थॉट, पृ0 531.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

वे रूसी सेना के सामने आत्मसमपर्ण कर देगें। बोस का विचार था कि रूसी सैनिक ही ब्रिटिश सेना का सामना कर सकते हैं। 17 अगस्त 1945 को एक विमान से वे ताईपेई के लिए चल पड़े। यह कहा जाता है कि विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और इस दुर्घटना में नेताजी घायल हो गए। 18 अगस्त 1947 को रात के समय उनकी मृत्यु हो गई तथा 21 अगस्त 1947 को कर्नल रहमान की देखरेख में नेता जी को ताईपेई में दफना दिया गया। उनके अन्तिम शब्दों के बारे में कर्नल रहमान ने लिखा है – ''नेता जी के अन्तिम शब्द थे– अबीब, मेरा अन्त बहुत शीघ्र आ रहा है। मैंने आजीवन अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध किया है। मैं अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए मर रहा हूँ। जाओ और मेरे देशवासियों से कह दो कि वे भारत की आजादी के लिए लड़ाई जारी रखें। भारत आजाद होगा, और जल्दी ही।'' इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों और अफसरों को पकड़कर दिल्ली के लालकिले में मुक्द्दमा चलाया। इससे सारे देश में रोष की लहर दौड़ गई तथा भारत के राजनैतिक दलों ने भी आजाद हिन्द फौज के कैदियों की रिहाई की मांग की। अन्त में 1 जनवरी 1946 को आजाद हिन्द फौज के अफसरों की सजा माफ कर दी गई। इस तरह नेता जी व उनके संगठन आजाद हिन्द फौज की भारत की आजादी की लड़ाई में एक निर्णायक यात्रा अपने गन्तव्य पर पहुंच गई।

सारांश– चूंकि नेता जी भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के महत्वपूर्ण क्रांतिकारी व उग्र राष्ट्रवादी नेता रहे और उन्होंने आजाद हिन्द फौज के माध्यम से भारत के स्वाधीनता संघर्ष में अहम योगदान दिया, परन्तु सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु ने भारतवासियों के सामने एक अनसुलझा प्रश्न पैदा कर दिया। आज भी भारतीय इतिहास में नेता जी की मृत्यु एक पहेली है। मोदी सरकार के बनने के बाद कई फाईलों को खंगाला गया तो कई चौकांने वाले तथ्य सामने आये। इसके बाद नेता जी की मृत्यु को लेकर अधिक संशय पैदा हो गया और आज भी कई भारतवासी उनको जीवित मानते हैं। सच्चाई कुछ भी हो नेता जी ने विदेशी धरती से आजाद हिन्द फौज को गठित करके ब्रिटिश सेना से लोहा लिया और भारत की मुक्ति के प्रयास किये। नेता जी को सच्ची श्रद्धाजंली यही होगी कि आज भारत में जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा, आदि को लेकर एकता व अखण्डता को लेकर खतरा पैदा किया

जा रहा है, उसके लिए हर भारतवासी यह सोच रखे कि भारत की आजादी हमारे क्रांतिकारियों के खून से सीचिंत है और इसकी सुरक्षा करना हर भारतीय का कर्त्तव्य है।

सन्दर्भ सूची–

- जे. ब्राऊन, गांधी टाईम टू पॉवर, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, लंदन, 1972.
- जी.डी. खोसला, लास्ट डेज ऑफ नेताजी, थॉमसन प्रेस, दिल्ली, 1974.
- भगतराम तलवार, दॉ तलवारस ऑफ पठान एण्ड सुभाषचन्द्रस ग्रेट एस्केप, पीपल्स पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1976.
- विपिन चन्द्र, इंडियन नेशनल मूवमेंट, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1988.
- जी. एलयोसियस, नेशनलिजम विदाऊट ए नेशन इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली, 1997.
- उर्मिला शर्मा, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1999.
- दीनानाथ वर्मा, भारत में उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद, ज्ञानंदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000.
- शिवानी किंकर चौबे, भारत में उपनिवेशवाद, स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 2000.
- अयोध्या सिंह, हिन्दुस्तान का स्वाधीनता आन्दोलन और कम्युनिस्ट, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 2001.
- विधुत चक्रवर्ती एवं राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, मार्डन इंडियन पॉलिटिक्ल थॉट, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2009.
- मनोज सिन्हा, गांधी अध्ययन, ओरिंयट ब्लैक स्वॉन, नई दिल्ली, 2011.
- आर.सी. अग्रवाल एवं महेश भटनागर, भारतीय संविधान का विकास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, एस. चन्द एण्ड कम्पनी, 2013.
- सोहन राज तातेड़, भारत में अंग्रेजी राज एवं नवजागरण, लिटरेरी सर्किल, जयपुर, 2014.